सांतवा अध्याय : भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : समस्याएं और संभावनाएं

सांतवा अध्याय : भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : समस्याएं और संभावनाएं

बहुत गहराई से अगर चीजों को देखे और समझने की कोशिश करें तो स्पष्ट होता है कि मानव समाज में एलजीबीटीक्यूजन की उपस्थिति आज नहीं बहुत आदिकाल से रही है। हालांकि इस प्रवृति को समझना और इसे कोई तकनीकी रूप देना शायद आज के समसामयिक मांग के अनुरूप उस समाज में नहीं था। इस नाते बहुत सी चीजें बहुत मुखर रूप में स्पष्ट नहीं हो पाई। आज हम विमर्शों के दौर में हैं बहुत आदिकालीन व्यवस्थाओं से आगे बढ़कर नई व्यवस्थाओं को भी देख- समझ और मान्यता प्रदान कर रहे हैं। अब समाज जब इतना प्रौढ़ और आगे बढ़ा हुआ है कि बहुत स्थापित क्रियाओं के अतिरिक्त भी अन्य मानवीय गुण-दोष तथा इच्छाओं-आकांक्षाओं पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है ऐसे में यह प्रवृति उभरकर बहुत स्पष्टता के साथ हमारे समाज में आयी है। हालांकि भारतीय समाज अब भी इस विषय को लेकर बहुत दुरुस्त नहीं है फिर भी पुराने दौर की तुलना में आज समाज का एक संवर्ग इसके प्रति सकारात्मक दृष्टि विकसित कर चुका है और इस तबके के लोग अपने अधिकार और अस्तित्व को लेकर एक सम्मान भाव के साथ समाज में खड़े और गतिशील हैं। भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यूजन की उपस्थिति को इस बात से समझा जा सकता है कि आज एलजीबीटीक्यूजन अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संगठनात्मक स्तर पर सक्रिय है, वह इधर-उधर छितराएं होने की बजाय एक साथ संगठित होकर एक झंडे के नीचे आकर खड़े होने का साहस दिखा पा रहे हैं। यद्यपि एक बड़ी तादात अब भी सामाजिक मान्यताओं और बंदिशों के नाते एक दायरे में घिरी हैं और खुलकर बाहर आकर कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हैं। तब भी एक ठीक-ठाक हिस्सा बाहर सक्रिय हैं। ढेर सारे संगठन आज भारतीय समाज में सक्रिय हैं जो एलजीबीटीक्यूजन

का सीधे हिस्सा हैं और कुछ संगठन ऐसे हैं जो सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करने के अपने कर्म के तौर पर एलजीबीटीक्यूजन के आंदोलन को समर्थन प्रदान कर रहे हैं।

आज भी भारतीय समाज की बहुसंख्यक आबादी एलजीबीटीक्यूजन को मान्यता प्रदान नहीं करती। तकनीकी रूप में कानूनी तौर पर उनको कुछ सुरक्षा प्रदान करने की बात स्पष्ट है लेकिन समाज अब भी उनको अपना मुख्य हिस्सा नहीं मानती। इसके पीछे ढ़ेर सारे कारण हैं चूंकि मनुष्य के बीच प्रजनन और संतान उत्पत्ति एक महत्वपूर्ण क्रिया मानी जाती रही है, एलजीबीटीक्यूजन में इस तरह की संभावनाएं एक तरह से क्षीण हो जाती है ऐसे में समाज का मुख्य तपका अब भी इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। साहित्य, फिल्म और अन्य रचनात्मक विधाओं में इनकी उपस्थिति धीरे-धीरे दर्ज हो रही है। और जो लोग अल्पसंख्यक तौर पर कहीं है वो एक तरह से हाशिये पर हैं और तमाम तरह की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। अकेले होने के कारण कुछ कुंठा के भी शिकार हैं। समूह में जाने के बाद वो इस बात की अनुभूति पा लेते है कि उनके जैसे अन्य लोग भी हैं लेकिन जो समूह से अलग हैं, पृथक हैं, अकेले हैं उनके लिए यह समझना कि उनकी उस प्रवृति को समर्थन देने वाला कोई है बड़ा मुश्किल है। ऊपर से जरूरी नहीं है कि एलजीबीटीक्यूजन अपने साथी को पा ही ले। मुख्यधारा के समाज में रहकर मुख्यधारा की प्रवृतियों के साथ जीते हुए अपना साथी पाना इनके लिए असंभव सा हो जाता है। ऐसे में हो सकता है कि सामाजिक मान्यताओं, मर्यादाओं और दबाओं में वो अपनी मूल प्रवृति से अलग हटकर मुख्यधारा की प्रवृति को अपनाकर आगे बढ़ने तथा दबाव में किसी को भी अपना साथी बनाने से उनकी मूल प्रवृति की हत्या हो जाती है। ऐसे में संभव है कि वह सामाजिक रूप से स्वीकृति पाने के बाद आंतरिक रूप से अवसादित हो जाए।

कुछ रचनाकारों तथा एलजीबीटीक्यू लोगों से साक्षात्कार लिया गया। कुछ स्पष्ट रूप से अपनी प्रवृति को बताने की स्थिति में नहीं थे। कुछ लोगों ने नाम न बताने की शर्त पर अपने मनोभावों को प्रस्तुत

किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उनकी मूल प्रवृति वैसी रही है पर सामाजिक मान-मर्यादाओं के कारण अपनी मूल प्रवृति की हत्या करके मुख्यधारा के अनुरूप जीवन जीने का दिखावा कर रहे हैं। जो एक तरह से कही ना कही मानसिक कुंठा का भी एक कारण बन रहा है। जो लोग बहुत स्पष्टता से समाज से लड़ते हुए एक झंडे के नीचे आकर एक प्लेटफॉर्म पर खड़े हैं उनकी स्थिति कुछ दुरुस्त है लेकिन समग्र रूप से मुख्यधारा का समाज अब भी उन्हें अपना हिस्सा नहीं मानता और उन्हें ढ़केल कर किनारे खड़ा कर देने की मुहिम में ही है। तथाकथित प्रगतिशील मानसिकता के लोगों ने उन्हें स्वीकार भी किया है किन्तु वह संख्या मुट्ठी भर है। कानूनी रूप से कागज पर इस संबंध में प्रावधान होने के बाद भी अभी भी यह कहा जा सकता है कि स्थिति बहुत सुखद नहीं है। बहुत तकनीकी रूप से उनके पक्ष में नहीं है। बहुत सुखदायी अवस्था और संतुलित दृष्टिकोण के साथ जीने की स्थिति में वह नहीं है और शायद उस स्थिति को हाशिल करने में इस समुदाय को न जाने कितने और वर्ष लगेंगे।

भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यूजन की समस्याओं और संभावनाओं के संबंध में लिए गये साक्षात्कार उल्लेखित है -

1. 'ये जो देश है मेरा' कहानी के लेखक सूरज प्रकाश से हुई बातचीत -

(1)जैसा कि हम जानते है आपकी कहानी 'ये जो देश है मेरा' लेस्बियनिज़्म को आधार बनाकर लिखी गयी है। आपने कहानी का विषय 'लेस्बियनिज़्म' क्यों चुना ? इस कहानी को लिखने की प्रेरणा आपको कहां से मिली ?

उत्तर - लेखक को अपनी कहानियाँ खोजने के लिए कहीं दूर नहीं जाना पड़ता। कहानियाँ उसके आसपास बिखरी होती हैं। बस एक नजर चाहिए होती है कि उन पर लेखकीय निगाह डालें और उसे कहानी में बादल डालें। बेशक उस घटना को कहानी में बदलने के लिए बहुत मशक्कत करनी पड़ती है और इसमें बहुत मेहनत और समय भी लगता है घटना को लेखकीय दृष्टि से कहानी बनाने में।

यह जो देश है मेरा कहानी के साथ भी ऐसा ही हुआ। यह एक सच्ची घटना है जिस पर कहानी का ताना-बाना बुना गया है। हरलीन नाम की नायिका (बेशक नाम बदला हुआ है) मेरी एक मित्र की मित्र थी और वह इस पूरी घटना की गवाह थी। मेरी मित्र ने मुझे यह घटना सुनायी थी और मैं घटना सुनने के बाद कई दिन तक सो नहीं पाया था। बाद में मुझे इसमें कहानी की संभावनाएं नजर आयीं और मैंने इसे कहानी के रूप में ढालने की कोशिश की। सिर्फ एक घटना के आधार पर कहानी लिखना इतना आसान नहीं होता। उसके लिए पात्र, वातावरण, घटनाएं, संवाद, नाटकीयता और बहुत कुछ चाहिए होता है इसे कहानी बनाने के लिए। इस कहानी को बुनने में मुझे छह महीने का समय लगा। कहानी के बैकग्राउंड में बॉलीवुड की दुनियां है, वहाँ के संघर्ष हैं, असफलताएं हैं और आशाएं हैं।

कुल मिलकर जब यह कहानी लिखी गयी तो मुझे इस बात का संतोष हुआ कि मैं समाज के एक ऐसे सच को सामने ला सका जो आम तौर पर सामने नहीं आता। बाकी सब के लिए हरलीन की आत्मकथा एक दुखद घटना थी लेकिन मेरे लिए वह असीम संभावनाओं वाली कहानी बनकर आयी और यह कहानी आपके सामने है। लेस्बियन पात्र रचना और सेक्स चेंज की प्रक्रिया बताना इतना आसान नहीं था। इसके लिए रिसर्च और धैर्य की जरूरत थी। मैंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में लगभग 300 पात्र रचे हैं और उन 300 पात्रों में से लगभग ढाई सौ पात्र महिला पात्र हैं। हरलीन मेरे रचे गए पात्रों में से सर्वप्रिय पात्र है। इसे मैंने बहुत मन से और धैर्य के साथ रचा है।

(2)आज भी जब समाज लेस्बियन, गे, बाईसेक्शुअल तथा ट्रांसजेन्डर पर बात करने से कतराता है तो ऐसे में सात वर्ष पहले (2015) जब आपने लेस्बियन विषय को आधार बनाकर कहानी लिखी तो आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

उत्तर- मैंने हमेशा प्रयोगधर्मी कहानियाँ लिखी हैं और मैंने यह देखकर कभी कोई कहानी नहीं लिखी कि पाठक वर्ग इसे कैसे लेगा। मेरी कहानियाँ हमेशा वक्त से आगे की लिखी गई हैं और पाठकों ने उन्हें देर से

भी स्वीकार किया ही है और अगर नहीं भी किया तो मैंने परवाह नहीं की है। 2015 में लेस्बियन और सेक्स चेंज की कहानी लिखते हुए मेरे मन में कोई दुविधा नहीं थी , बेशक सेक्स चेंज के लिए मुझे डॉक्टरों से जानकारी लेनी पड़ी कि पूरी प्रक्रिया क्या होती है और कितना खर्च, कितना समय लगता है। सारी जानकारी लेने के बाद ही मैंने कहानी में ये डीटेल दिए थे। कहानी अपने नयेपन के कारण बहुत पसंद की गई थी। और देर तक इस कहानी की चर्चा होती रही थी।

(3)कहानी की केन्द्रीय लेस्बियन पात्र हरलीन द्वारा नेहा को यह कहना कि "तुम खुद हॉस्टल में रही हो और अलग-अलग शहरों में रही हो तो जानती ही होगी कि ये लेडीज हॉस्टल ही लेस्बोप्रोडक्टस के ग्रूमिंग ग्राउन्ड होते हैं" इस बात से आप कहां तक सहमत है ? क्या लेस्बियनिज़्म परिस्थितिवश उत्पन्न होता है ?

उत्तर - ये संवाद अपने आप में स्पष्ट है और इसकी तह में जाने की जरूरत नहीं है। चूंकि आप खुद एक शोध छात्रा हैं तो ये विषय आपके लिए नया और चुनौतीपूर्ण होना चाहिए कि लेखक ने जिस विषय को आधार बना कर कहानी लिखी है क्या हर बार वही परिस्थितियाँ होती हैं लेस्बियन होने की या नायिका के अंतर्मन में ये इच्छा कहीं ना कहीं दबी थी या फिर दबाव में आ कर नायिका ने ऐसे संबंध बना तो लिए पर इस रिश्ते का तनाव उसके नैतिकता पर भारी पड़ा और उसने आत्महत्या जैसे पलायनवादी कदम उठाए। क्या नायिका का छोटे शहर से होना और बाद में हॉस्टल में रहना या बंबई आना उसके उन्मुक्त और ऐसे समाज में फिट होने में अड़चन बनी। ये सब शोध करने वाले को खुद देखना होगा। लेखक से उसके लिखे की व्याख्या करने के लिए नहीं कहा जाता।

(4)समलैंगिकता को आप किस रूप में देखते हैं ?

उत्तर- मैं समलैंगिकता को उसी रूप में देखता हूँ जिस रूप में हमारे देश का कानून देखता है। यह कोई बीमारी नहीं है।

(5)आपके अनुसार भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यूजन की क्या समस्याएं हैं ? उनकी अस्वीकृति का क्या कारण है ?

उत्तर- कोई भी समाज सैकड़ों वर्षों से हजारों वर्षों से बंधी -बंधाई लीक पर चलता है। बंधे-बँधाएं नियम-कायदों पर चलता है। उसमें कुछ भी ऐसा स्वीकार नहीं होता जो उसकी लीक से हटकर हो जो उसे पसंद न आए या जो उसके बने-बनाएं मान-दंडो से अलग हो। अब चाहे लेस्बियन रिश्ते हो या चाहे गे रिश्ते हो ये हटकर हैं। सामान्य मान-दंडो के अनुसार ये स्वीकार नहीं होते। इसीलिए जो भी अलग है, हटकर है, नया है, जो उनकी मान्यताओं के खिलाफ है उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। और यह हर समाज में होता है कि चीजों को इतनी आसानी से स्वीकार नहीं किया जा सकता। अब जैसे अलग-अलग धर्मों की शादियाँ ही क्यों न हो अभी भी इतनी आसानी से इसे स्वीकार नहीं किया जाता। मां -बाप नाराज हो जाते हैं और महीनों मुंह फुलाएं रहते हैं। कई बार तो पूरी जिंदगी बच्चों को माफ नहीं करते। हाँ बच्चे हो जाने के बाद कई बार मां-बाप स्वीकार कर लेते है लेकिन दूसरे धर्म की लड़की या दूसरे धर्म के लड़के की शादी आज भी स्वीकार नहीं की जाती है। तो जो भी उनके तथाकथित मानदंडों के, नियमों के या रीति-रिवाजों के या सोच के अनुसार नहीं है उसका विरोध करना है। दो फिल्में आयी हैं। पहली 'बधाई दो' और 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' जिनमें इन समस्याओं को दिखाने की कोशिश की गई हैं। समाज आसानी से इन चीजों को स्वीकार नहीं करता है। और लेस्बियन और गे रिश्तों को तो कानून बन जाने के बाद भी स्वीकार नहीं किया जाता। तो ये सारी चीजें तय करती है कि क्या स्वीकार है और क्या अस्वीकार है। एक और उदाहरण देता हूँ। लिविंग टुगेदर बंबई, बंगलोर, पुना, कोलकाता जैसे शहरों में हो सकता है कुछ हद तक स्वीकार हो लेकिन आम तौर पर पूरे भारत में स्वीकार नहीं है। लड़के-लड़की को इस बिनाह पर मकान भी नहीं मिलता की उन्होंने शादी नहीं कर रखी है। तो इसमें कोई दिक्कत नहीं है एक साथ रहने में, एक-दूसरे को समझने में

लेकिन समाज के अपने बंधे-बँधाएं फॉर्मूलें है कि नहीं अगर शादी से पहले एक साथ रह रहे हैं तो गंध फैला रहे हैं उनकी भाषा में।

2. Mauritius (मॉरीशस) में रहने वाले ट्रांसजेन्डर Sanju Lootooa का साक्षात्कार -

(1)आप अपना परिचय बताएं ?

उत्तर - मैं मॉरीशस में रहता हूँ। मूलतः मेरा नाम संजु लुत्वा है। मैं 23 वर्ष का हूँ। लोग मुझे प्यार से संजु कहकर पुकारते है। हाल ही में हिन्दी से मैंने अपना ग्रेजुएशन पूरा किया है।

(2)आप अपनी पहचान के बारे में बताइए ?

उत्तर- जैविक रूप से मेरा जन्म लड़की के रूप में हुआ था। लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया वैसे-वैसे मुझे एहसास हुआ कि मैं लड़की नहीं हूँ। और धीरे-धीरे मैंने अपने आप को पहचानना शुरू किया और तब मुझे लगा कि मैं एक लड़का हूँ। मैं एक ट्रांसजेन्डर हूँ।

(3)बचपन की कोई ऐसी घटना जिससे आपको लगा हो कि आप समाज के इस जेन्डर डिविशन से अलग हैं।

उत्तर - बचपन में ऐसा कई बार हुआ जब मैंने महसूस किया। मैंने देखा कि लड़कियों के लिए डॉल्स, पिंक कलर के कपड़े आदि दिए जाते थे जबकि मेरे चचेरे भाइयों को ब्लू कलर के कपड़े दिए जाते थे। उन्हें फुटबॉल खेलने के लिए दिया जाता था। बचपन से मुझे अपने भाइयों के जैसे कपड़े चाहिए था। उनके साथ फुटबॉल खेलना था। अपने कमरे का रंग ब्लू चाहिए था। तब मुझे लगने लगा कि मैं अलग हूँ। जो पहचान परिवार और समाज ने मुझे दी है वह मैं नहीं हूँ।

(4)नॉर्मल या ऐब्नॉर्मल की जो समझ है उसका आपकी पहचान पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- बेहद डरावना अनुभव है। जब मैं प्राथमिक स्कूल में था तब मुझे ये बातें समझ में नहीं आती थी। लेकिन जब मैं कॉलेज में गया तब मुझे लगने लगा कि मैं स्त्री या पुरुष खांके में फिट नहीं हो पा रहा हूँ। लड़के हमेशा मुझे चिढ़ाते और कहते कि लड़कियों के साथ बैठो। लेकिन मैं लड़कियों के समूह में भी फिट नहीं बैठ रहा था। मैं अपने-आप को अकेला महसूस करता था। मेरे एकाद मित्र थे लेकिन मैं उन्हें कभी अपनी पहचान के बारे में बता नहीं पाया। अकसर मुझे चिढ़ाया जाता था कि ना तो मैं लड़कियों के जैसे सुंदर हूँ और ना तो लड़कों की तरह मर्दाना। मैं बिल्कुल अकेला था यह मेरे जीवन का सबसे खराब समय था। इस तरह मेरे कॉलेज के दिन बहुत डरावने थे। लेकिन जब मैं विश्वविद्यालय आया तो मुझे अच्छे लोग मिले। उन्होंने मेरी मदद की। मेरे दोस्त भी बने और मैंने अपने लिए खड़ा होना भी सीखा।

(5)मॉरीशस में लोग जेन्डर और यौनिकता को अब किस रूप में देख रहे हैं ?

उत्तर - मॉरीशस की पचास प्रतिशत जनता स्त्री-पुरुष से भिन्न जेन्डर और यौनिक पहचान के प्रति संवेदनशील हैं। उन्हें किसी तरह की कोई आपत्ति नहीं है लेकिन बाकी के पचास प्रतिशत लोग सोचते है कि यह एक बीमारी है। मैं अपने विभाग का एक अनुभव आपके साथ साझा करना चाहूँगा। मैं जब वहाँ पढ़ता था तो लोगों को यह समझा-समझा कर थक चुका था कि मुझे लड़के के रूप में पहचाना जाये लेकिन वह यह समझने को तैयार ही नहीं थे। लेकिन वर्तमान में मैं जिस कंपनी में काम कर रहा हूँ वहाँ मुझे आदर और सम्मान के साथ देखा जाता है। वहाँ मेरे जैसे कई अन्य लोग भी काम करते हैं। एलजीबीटीजन के प्रति लोगों को अपनी सोच बदलने में वक्त तो लगेगा लेकिन इसकी शुरुआत हो चुकी है।

(6)अपनी पहचान को समझने और स्वीकार करने में आपके परिवार की क्या भूमिका है ?

उत्तर - जब मैं कॉलेज में पढ़ता था तब मेरे घर वालों को मेरी पहचान के बारे में पता चला था। तब उन्होंने मुझे ठीक करने के लिए पंडितों का सहारा लिया। उन्हें लगा मुझमें किसी देवी का प्रवेश हो गया है। मैं इन सारी चीजों से बेहद परेशान था। मैंने अपने घरवालों और पिता को यह समझाया और बताया भी कि मैं

ट्रांस हूँ और मैं इससे खुश हूँ। वो मेरी पहचान को नहीं समझते थे। वो मुझे प्यार तो करते है लेकिन मेरी पहचान से डरते है। अब लगता है कि बिना कुछ बताए भी धीरे-धीरे वो चीजों को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

(7)एक ट्रांसजेन्डर होने के नाते आपके अनुसार समाज में एलजीबीटीजन की क्या समस्याएं हैं ?

उत्तर - मुझे लगता है कि एलजीबीटीजन समुदाय एक साथ लड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। अपनी आजादी को प्राप्त करने हेतु एक साथ लड़ने को तैयार नहीं हैं। अगर मॉरीशस की बात करें तो यहाँ कई गैर-सरकारी संगठन है लेकिन एलजीबीटीजन के अधिकारों के प्रति बहुत सक्रिय नहीं दिखते।

(8)विवाह का दबाव एलजीबीटीजन को कैसे और कितना प्रभावित करता है ?

उत्तर - जैसे विषमलैंगिक लोगों पर विवाह का दबाव देखा जाता है वैसे ही एलजीबीटीजन पर भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। हमें इससे बचने के लिए कई बार झूठ तो कई बार बहाने बनाने पड़ते हैं।

(9)एलजीबीटीजन को लेकर 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' जैसी जो फिल्में बन रही हैं उस पर आपकी क्या राय हैं ? क्या इन फिल्मों के पात्र सच में एलजीबीटीजन का प्रतिनिधित्व करते हैं ?

उत्तर - अब फिल्मों में एलजीबीटीजन पर प्रकाश डाला जा रहा है। आज कल जो वेब-सीरीज बन रहे हैं उसमें फिर भी इस समुदाय को कुछ हद तक सही रूप में दिखाया जा रहा है लेकिन बॉलीवुड की फिल्मों में जिस तरह से दिखाया जा रहा है वह नाटकीय लगता है, अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है, वास्तविकता से थोड़ा दूर लगता है।

3. 'सखि साजन' कहानी की लेखिका आकांक्षा पारे काशिव जी का साक्षात्कार -

(1)आप अपने तथा अपने रचनात्मक संसार के बारे में बताएं ?

उत्तर - मैं मध्य प्रदेश, इंदौर की रहने वाली हूं। स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई वहीं से की है। जीव विज्ञान में स्नातक करने के बाद इंदौर के ही देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग से पत्रकारिता का कोर्स किया है। 2010 में मैंने तीन सहेलियां तीन प्रेमी शीर्षक से कहानी लिखी। यह कहानी ज्ञानोदय में प्रकाशित हुई और इसे रमाकांत स्मृति पुरस्कार मिला। मैं विषयों का चुनाव कर नहीं लिखती। जो कहानियां मन में पहले लिख ली जाएं, वही कागज पर उतारती हूं। यदि कोई मुझे कोई घटना सुनाए तो वो मेरे अवचेतन में कहीं न कहीं रह जाती है। यदि मैं किसी से मिलूं और उसमें कुछ खास बात देखूं तो याद रखती हूं। बस फिर यही सब बातें मिल कर मेरे कहानी के विषय हो जाते हैं। अभी तक चार कहानी संग्रह आए हैं, तीन सहेलियां, तीन प्रेमी (राजकमल प्रकाशन), बहत्तर धड़कनें तिहत्तर अरमान (सामयिक प्रकाशन), पिघली हुई लड़की (राजपाल ऐंड संस), मैं और मेरी कहानियां (कौटिल्य प्रकाशन) से। फिलहाल मैं दिल्ली में आउटलुक पत्रिका में सहायक संपादक के तौर पर काम कर रही हूं।

(2)आपकी कहानी 'सखि साजन' लेस्बियनिज़्म और उभयलैंगिकता को केंद्र में रखकर लिखी गयी है। इस कहानी को लिखने की प्रेरणा आपको कहां से मिली? आपने लेस्बियनिज़्म और उभयलैंगिकता को कहानी के विषय के रूप में क्यों चुना ? लेस्बियनिज़्म और उभयलैंगिकता को साथ-साथ चित्रित करने के पीछे क्या कोई विशेष कारण था ?

उत्तर - ऐसा कोई खास एजेंडा नहीं था कि मुझे लेस्बियन पात्रों को लेकर कहानी लिखना है। एकपरिचित ने अपने हॉस्टल का एक वाकया साझा किया था। उससे पहले मैंने कभी बहुत गहराई में जाकर एलजीबीटीक्यू समुदाय के बारे में सोचा या पढ़ा नहीं था। उस वाकये को सुन कर मेरा मन बहुत दिन परेशान रहा। कहते हैं लड़कियां कोमल होती हैं, लेकिन दोनों में से एक इतनी निष्ठुर हो गई कि दूसरी के विषय में कुछ सोचा ही नहीं। बस वहीं से कहानी लिखने के बारे में सोचा। लेकिन मैंने बताया न कि मैं किसी एजेंडा के तहत यह कहानी लिखना नहीं चाहती थी, इसलिए पूरी कहानी में मैंने एक बार भी कहीं लेस्बियन शब्द का इस्तेमाल

नहीं किया। मैं चाहती थी कि कहानी में लेस्बियन लड़की की भावना उभरे, सनसनी नहीं। विषय चुनने के पीछे बस एक ही कारण था कि इनका अपना समाज है और उपेक्षित है। दुनिया को इनके बारे में जानना चाहिए।

(3)आपने 'सखि साजन' कहानी सन् 2014 में लिखी थी। तब जब आज के जितना इस विषय पर बातचीत नहीं हुआ करती थी। तब और आज में आप इस विषय के प्रति क्या फर्क देख पाती है ? क्या इस विषय को देखने और समझने में किसी तरह का कोई बदलाव आया है ? क्या इस विषय के प्रति लोगों की धारणा विकसित हुई है ?

उत्तर - हां यह सच है कि 2014 में इस समुदाय पर इतनी बातचीत नहीं होती थी। लेकिन इनका दायरा धीरे-धीरे बढ़ रहा था। तब और आज में इनकी संख्या बेशक बढ़ गई है, ये लोग ज्यादा दिखने लगे हैं लेकिन इनके प्रति लोगों की धारणा नहीं बदली। कुछ लोग इन्हें मानसिक तौर पर बीमार मानते हैं। सोच बदलना सबसे कठिन काम है। क्योंकि जो बात गहरे बैठी हुई हो उसे निकालना इतना आसान नहीं होता। अब मीडिया में इनके बारे में ज्यादा आने लगा है, ये लोग खुल कर अपनी बात बोल पाते हैं इसलिए हो सकता है आने वाले समय में इनके प्रति धारणा बदले।

(4)भारतीय समाज में LGBTQ जन की क्या समस्याएं है ?

उत्तर - समस्याओं की तो कोई गिनती ही नहीं है। अभी भी मुख्यधारा में आने के लिए ये लोग संघर्ष कर रहे हैं। शिक्षा के लिए इनका संघर्ष जारी है। मुख्यधारा के स्कूल या कॉलेज में प्रवेश पाना कठिन है। यदि मिल भी जाए, तो माहौल इतना विपरीत रहता है कि पढ़ना मुश्किल। पहली बात तो परिवार ही स्वीकार नहीं कर पाता और ऐसे लोगों को अपना परिवार छोड़ देना पड़ता है, जो इनके संघर्ष को बढ़ा देता है। लिंग की पहचान समाज में इतने गहरे जड़ जमा चुकी है कि इन्हें सामान्य जीवन जीने के लिए लंबा संघर्ष करना

पड़ेगा। इन समस्याओं को खत्म करने का एक ही तरीका है, शिक्षा। जब तक इन्हें पढ़ाया नहीं जाएगा, तब तक नौकरी या रोजगार के साधन इनके पास नहीं रहेंगे और इनकी समस्या ज्यों की त्यों रहेगी।

4. समलैंगिक नारीवादी ऐक्टिविस्ट माया शर्मा से हुई बातचीत -

(1)अपना परिचय बताते हुए अपनी पहचान के बारे में बताएं ?

उत्तर- मेरा नाम माया शर्मा है। फिलहाल मैं बड़ौदा, गुजरात में काम कर रही हूँ। मैं अपने आप को लेस्बियन मानती हूँ।

(2)नॉर्मल या ऐब्नॉर्मल की समझ का एलजीबीटीक्यूजन की पहचान पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर- मुझे लगता है समाज जब भी किसी बदलाव की तरफ बढ़ता है या जो समाज के दिए हुए दायरों में फिट नहीं होता है उनको ऐब्नॉर्मल कहा जाता है। यहीं कारण है कि क्वीयर कम्यूनिटी को भी ऐब्नॉर्मल कहा जाता है। और मुझे लगता है कि समाज को सिस्टम से एक भय है। यहीं भय हमारे अंदर भी आता है, हमारी कास्ट और कम्यूनिटी पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। जिससे स्वयं को पहचानने में तकलीफ भी होती है कि मैं किसको पसंद करती हूँ और मेरा जेन्डर क्या है। दरअसल जब बचपन में हम किसी जेन्डर में फिट नहीं बैठते है मसलन जैसे मैं स्वयं को लेस्बियन मानती हूँ और मुझे औरतों के प्रति आकर्षण है तो स्वयं मैं इसको समझ नहीं पाती हूँ। और ना ही इसे व्यक्त कर पाते है। ऐसे शब्द नहीं होते हैं जिससे इस आकर्षण को व्यक्त किया जा सके। अपनी इस व्यथा को व्यक्त करना बेहद मुश्किल होता है। एक छटपटाहट होती है। जैसे-जैसे बड़े होते जाते है वैसे-वैसे हर बात पर ऐब्नॉर्मल का ठप्पा पीछे खींचता जाता है। वह चाहे स्कूल हो, नौकरी हो या शादी जैसी व्यवस्था ही क्यों ना हो। बुढ़ापे में किसी तरह की सुरक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। हर स्तर पर एक लड़ाई लड़नी पड़ती है। मुझे लगता है ऐसे ही अनुभवों से गुजरना पड़ता है जब किसी को ऐब्नॉर्मल कहा जाता है।

(3)आप विकल्प संस्था से कैसे जुड़ी ? यह संस्था किन लोगों के लिए काम करती हैं ?

उत्तर- मैं पहले दिल्ली में काम करती थी। सन् 2000 में Violence Against Women के अंतर्गत वैश्विक रूप से यह तय हुआ कि स्त्रियों के प्रति होने वाले हिंसा के मुद्दे को हम सार्वजनिक रूप से उठायेंगे। उन दिनों केरल में बहुत स्त्रियाँ आत्महत्या कर रही थी जिनके मुद्दे को भी हमने इसके अंतर्गत शामिल किया। ये सारे प्रकरण 'फायर' फिल्म के आने के बाद के है। आपसी समझ बनाने के उपरांत हमने पाया कि बहुत सारी महिलाओं की बातें तो थी परंतु वह सब कुछ केवल खबरों के माध्यम से सामने आता था। उनके निजी जीवन के बारे में हमें कुछ भी जानकारी नहीं थी। और ना ही हमें यह पता चल पाता कि अखबार के माध्यम से उनके खबरों के बाहर आने के बाद उनकी स्थिति कैसी है या उनके जीवन में किस तरह का परिवर्तन हुआ है। उनके निजी जीवन को जानने की आवश्यकता थी। इस उद्देश्य से मैंने कुछ कहानियाँ इकट्ठी की जिससे कि हम इन कहानियों की वास्तविकता का सबूत दे सकें। जिसमें 'विकल्प' ने मेरी सहायता की। और इस तरह मैं विकल्प से जुड़ा। महिला आंदोलन में भी हम औरतें जो एक -दूसरे को प्यार करती थी। हम मिल-बाटकर बात किया करते थे। हमें अपनी पहचान के बारे में मालूम था लेकिन हम बाहर व्यक्त नहीं कर पाते थे। मैंने यहाँ पाया कि स्त्रियाँ बहुत आईसोलेटेड हैं। और तब मैंने तय किया कि मुझे यहाँ जमकर काम करना है।

(4)आप निरंतर महिलाओं के मुद्दे पर काम करती रही हैं। आपके लेखन में एकल महिलाएं तथा समलैंगिक महिलाएं सदैव अभिव्यक्ति पाती रही हैं। एकल महिलाओं और समलैंगिक महिलाओं के बीच आप क्या फर्क पाती हैं ? दोनों के संघर्ष में क्या समानता और असमानता है ?

उत्तर- एकल महलाओं पर काम करने के दौरान जो महिलाएं महिलाओं को प्यार करती है उनके बारे में भी जानकारी मिली। एकल महिलाओं को हमने विवाह के ढांचे के बाहर रहने वाली महिला के रूप में परिभाषित किया। जैसे कि जो विधवा हो जाती है या जो अलग हो जाती है। कई लेस्बियन औरतें स्वयं को

एकल बता कर अपना जीवन व्यतीत करती है। यह जीवन जीने का अपना तरीका है। लेकिन आवश्यक नहीं की हर एकल औरत लेस्बियन हो। अतः एकल महिला के अंतर्गत कई तरह की औरतें शामिल हैं जिनमें से एक समलैंगिक महिला है।

(5)आपने भौरी की जीवनी लिखी। इसका अनुभव बताते हुए भौरी और उसकी सहेली ठकुराइन के संबंध के बारे में बताइए ?

उत्तर- भौरी और ठकुराइन दोनों विवाहित स्त्रियाँ हैं। लेकिन दोनों को एक-दूसरे से प्यार है। दोनों स्त्रियाँ और उनका प्यार बहुत सी भ्रांतियों को तोड़ने का काम करता है। मसलन औरत औरतों की दुश्मन होती हैं। भौरी और ठकुराइन जैसी बहुत सी स्त्रियों की कहानियाँ बाहर नहीं आ पाती। मुझे उन दोनों स्त्रियों से बहुत कुछ सीखने को मिला। जीवन की कम्प्लेक्सिटी को समझने का अवसर मिला।

(6)सन् 2006 में आपकी प्रकाशित पुस्तक 'Loving Women' में आपने क्वीयर स्त्रियों की जिंदगियों से जुड़ी दस जीवनियां लिखी है। भारतीय समाज से जुड़ी ये जीवनियां इस बात को खारिज करती है कि समलैंगिकता पश्चिम की देन है। जिसपर बार-बार प्रश्न उठाया जाता है। इन जीवन वृत्तों से जुड़ने में आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

उत्तर- इन जीवन वृत्तों से जुड़ने में मुझे किसी खास तरह की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा। हाँ यह जरूर था कि बहुत सी स्त्रियाँ अपनी कहानी बताती तो थी पर वह नहीं चाहती थी कि उनकी कहानियों को लिखा जाए। बहुत बार ऐसा भी हुआ कि स्त्रियाँ कहानी में अपना नाम और परिचय बदलने के लिए कहती। परंतु मेरा मानना था कि जब तक ये कहानियाँ सार्वजनिक नहीं होंगी तब तक यह मिथ बना रहेगा कि समलैंगिकता पश्चिमी देन है। मेरे लिए बहुत कठिन था कि कहूँ, कैसे कहूँ, कितना कहूँ ?

(7)अन्य पहचानों की अपेक्षा लेस्बियन स्त्रियों को अपनी पहचान को अभिव्यक्त करना कठिन क्यों है ?

उत्तर- पितृसत्तात्मक समाज में औरतों को हमेशा शादी के ढांचे में परिभाषित किया जाता है। उसे हमेशा दबा कर रखा जाता है। उसके पहनावे से लेकर बोलने तक के मानक निर्धारित किए जाते है। जेन्डर के कायने बनाये जाते हैं। ऐसे में लेस्बियन स्त्रियाँ जब इन मानकों को लांघ कर अपनी यौनिकता को अभिव्यक्त करती है तो उन्हें विभिन तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

(8)क्या एलजीबीटीक्यू के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदल रहा है ?

उत्तर- बिल्कुल। मैं यदि आने अनुभव के आधार पर कहूँ तो बदल रहा है। अब तो कानून भी आ गया है। इस विषय पर चर्चा हो रही है। जब मैं 40 वर्ष की थी तब और अब जब मैं 70 वर्ष की हो गयी हूँ तब में कई तरह के बदलाव नजर आते हैं।

(9)भारतीय समाज में एलजीबीटीजन की क्या समस्याएं हैं ?

उत्तर- अभी भी इस समुदाय को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। नौकरियां नहीं मिल रही है। पहनावें से संबंधित तय मानकों के कारण भी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। विवाह व्यवस्था का दबाव भी काम करता है। ये सारी समस्याएं एलजीबीटीक्यूजन पर हावी है।

(10)आपकी अंतिम पुस्तक 'Footprints of queer History' Life Story from Gujarat" में आपने किन्हें शामिल किया है ?

उत्तर- इस पुस्तक में ज्यादातर transmasculine व्यक्तियों को शामिल किया गया है। ज्यादातर कहानियाँ उन जोड़ों से संबंधित है जो एक-दूसरे से प्यार करते है। भागकर आते हैं। ग्रामीण औरतों के प्यार से संबंधित कहानियाँ है। गाँव में प्रचलित धारणाओं से संबंधित कहानियाँ हैं।

5. 'अंधेरे का गणित' कहानी के लेखक पंकज सुबीर से हुई बातचीत -

(1)आपके कहानी संग्रह "ईस्ट इंडिया कंपनी" में प्रकाशित कहानी "अंधेरे का गणित" में समलैंगिकता जैसे संवेदनशील विषय को जो मूलतः सेक्सुअलिटी से जुड़ा हैं को विषय के रूप में चुनने का विचार कैसे आया ? वो भी तब जब समलैंगिकता पर बातचीत ना के बराबर होती थी ?

उत्तर- एक लेखक के रूप में मुझे लगता है कि मेरी जिम्मेदारी उन्हीं विषयों पर बात करने की अधिक है जिन विषयों को अभी तक नहीं छुआ गया है, या नहीं के बराबर छुआ गया है। भले ही हम इस विषय पर बात करने से बचते हों, पर यह विषय हमारे आसपास हर कहीं देखने को मिलता है। ये कोई ऐसा विषय नहीं है, जो हमारे आसपास घटित न होता हो। समलैंगिकता कोई एलियन थ्योरी नहीं है, जिसमें किसी और ग्रह की बात की जाती हो, यह हमारे ही रोजमर्रा के जीवन का विषय है। और इसी कारण मुझे लगा कि इस विषय पर भी कहानी लिखी जानी चाहिए।

(2) कहानी में आपने नायक को परिस्थितिवश 'Gay' बनता हुआ दिखाया हैं। क्या समलैंगिकता का जन्म स्थितियों के कारण होता है ? या यह जन्मजात होता है ? समलैंगिकता को आप किस रूप में देखते हैं ?

उत्तर- हमारी लैंगिकता असल में हार्मोन्स का परिणाम होती है। जितना मैंने विज्ञान का अध्ययन किया है, (चूंकि विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूँ, जीव विज्ञान में स्नातक तथा रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर) उसके अनुसार बारह साल की उम्र तक स्त्री तथा पुरुष के शरीर का विकास एक ही तरह से होता है, उसमें कहीं स्त्री तथा पुरुष का भेद नहीं होता है। बारह साल की उम्र के बाद शरीर में हार्मोन्स के स्ट्रॉ के कारण स्त्री तथा पुरुष शरीर के अनुसार परिवर्तन आने प्रारंभ होते हैं। शरीर में स्त्राव तो दोनों हर्मोन्स का होता है, स्त्री हार्मोन्स का भी और पुरुष हार्मोन्स का भी, मगर पुरुष शरीर में पुरुष हार्मोन्स तथा स्त्री शरीर में स्त्री हार्मोन्स अधिक स्त्रावित होते हैं। इस समय यदि किसी पुरुष के शरीर में स्त्री वाले हार्मोन्स, पुरुष हार्मोन्स की तुलना में अधिक स्त्रावित हो जाएँ, या इसके विपरीत हो, तो समलैंगिक स्त्री तथा पुरुष की स्थिति सामने आती है। इया उम्र में ऐसा कई बार स्वतः होता है या किसी कारण से (मेरी कहानी में जैसा होता है) भी ऐसा हो जाता

है, कि दूसरा हार्मोन अधिक स्त्रावित होने लगता है। कई बार घर में बहुत दबा कर रखे गए, अंतर्मुखी लड़के भी समलैंगिक हो जाते हैं। इस बारे में मैंने अपनी ही एक कहानी "कितने घायल हैं कितने बिस्मिल हैं" में विस्तार से लिखा है।

(3)कहानी का शीर्षक "अंधेरे का गणित" ही क्यों ?

उत्तर- क्योंकि यह उस विषय की कहानी है, जिसे अभी तक अंधेरे में रखा गया है। जिस पर बात करने से भी बचा गया। चाँद के दो हिस्से होते हैं, एक वह जो हमारे सामने होता है, दूसरा हिस्सा चाँद का वह है जो हमें दिखायी नहीं देता, इसे "डार्क साइड ऑफ मून" कहते हैं। यह हिस्सा अंधेरे में होता है ऐसा नहीं है, सूर्य की रौशनी वहाँ भी पड़ती है लेकिन चूंकि हमें वह हिस्सा महीन दिखता, इसीलिए हम उसे डार्क साइड कहते हैं। यह कहानी भी उसी डार्क साइड की है, हमें वह दिखता नहीं है, या हम उसे देखना नहीं चाहते, इसीलिए उसे अंधेरा कहते हैं, उस अंधेरे की गणित की कहानी है।

(4)सन् 2008 जब आप यह कहानी लिख रहे थे और आज 2022 जब हम समलैंगिकता पर बातचीत कर रहे हैं। क्या आप तब और आज में इस विषय के प्रति कोई अंतर देख पा रहे हैं ?

उत्तर- यह कहानी प्रकाशित हुई है 2008 में, लिखी गई है 1997 में, मतलब प्रकाशन के भी ग्यारह साल पहले। और अब तो इस कहानी को पच्चीस साल हो चुके हैं। मुझे नहीं लगता कि अभी भी हम समलैंगिकता पर मानसिकता में कोई अंतर ला पाए हैं। अभी भी हमारे मन में गे, लेस्बियन, बाईसेक्शुअल, ट्रांसजेन्डर लोगों के प्रति वही भाव हैं, जो पहले थे। बस अंतर यह आया है कि अब हम ऑस विषय पर बात करने लगे हैं। पहले इस विषय पर बात भी नहीं की जाती थी यह चाँद के डार्क साइड की तरह हमारे समाज में उपस्थित था, जो था भी और नहीं भी। अब कम से कम यह हुआ है कि इस पक्ष के अस्तित्व को स्वीकार तो किया जाने लगा है।

(5)क्या एलजीबीटीक्यू जन के प्रति समाज का नजरिया बदला है ?

उत्तर- नहीं... और मुझे नहीं लगता कि आने वाले चालीस-पचास सालों में भी इसमें कोई बदलाव आने वाला है।

(6)आपके अनुसार भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू जन की क्या समस्याएं हैं ?

उत्तर- मुझे लगता है कि एक ही समस्या है, और उसके हाल होने में ही सारी समस्याओं का हाल छिपा हुआ है। यह समस्या है स्वीकार्यता की। समाज के द्वारा स्वीकार किए जाने की। जब समाज द्वारा स्वीकार्य कर लिया जायेगा तो बाकी सब समस्याएं भी अपने आप ही हल हो जाएंगी।

6. जगजीत सिंह सलूजा का साक्षात्कार -

(1) आप अपना परिचय बताइए।

उत्तर- मेरा नाम जगजीत सिंह सलूजा है। मैं सिख समुदाय से आता हूँ। मैं 33 वर्ष का हूँ। महाराष्ट्र के पुणे शहर का निवासी हूँ। मैंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। मुझे हमेशा मेरे परिवार का सहयोग मिला है।

(2) आप अपनी पहचान के बारे में बताइए ?

उत्तर- मैं बाईसेक्शुअल हूँ। बाईसेक्शुअल का मतलब होता है एक ऐसा व्यक्ति जिसे पुरुष तथा स्त्री दोनों के प्रति आकर्षण होता है। बाईसेक्शुअल केवल पुरुष ही नहीं स्त्री भी होती है। लड़का तथा लड़की दोनों ही बाईसेक्शुअल हो सकते हैं। बाईसेक्शुअल व्यक्ति को दोनों जेन्डर की चाहत होती है। मुझे अपने युवावस्था में ही पता चल गया था कि मैं बाईसेक्शुअल हूँ। मुझे किसी तरह की समस्या नहीं हुई। मुझे कोई पुरुष नहीं मिला। मैंने विवाह एक स्त्री से की है। जो मेरी सबसे अच्छी मित्र है। हमारे विवाह को चार वर्ष हो गये है। हम एक-दूसरे के साथ बहुत खुश है। बाईसेक्शुअल व्यक्ति के साथ समस्या ये होती है कि वह किसी एक जेन्डर को चुन नहीं पाते। जैसे मेरी शादी एक स्त्री के साथ हुई है पर अक्सर मुझे एक पुरुष की कमी

खलती है। मेरी पत्नी और मेरे परिवार सभी को मेरी पहचान के बारे में पता है। मेरे सभी दोस्त भी मेरी पहचान से अवगत है। मैं एक ओपन बाईसेक्शुअल हूँ। मेरे कई मित्र भी ओपन बाईसेक्शुअल है। पर कुछ मित्र ऐसे भी है जो बाईसेक्शुअल है पर सामाजिक और अन्य कई कारणों की वजह से अपने बाईसेक्सुअलिटी को अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। गे तथा लेस्बियन लोगों की अपेक्षा बाईसेक्शुअल लोगों का जीवन कठिन होता है। अधिकांश बाईसेक्शुअल अपनी चाहत व्यक्त करने से डरते हैं।

(3) समाज की जेन्डर डिवीजन का आपकी पहचान पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- समाज सिर्फ दो ही जेन्डर को मानता है। स्त्री और पुरुष। भारत में इन दो जेंडर के अलावा अन्य जेंडर के प्रति भेदभाव तो है ही किन्तु उन देशों में भी अन्य जेंडर के प्रति उपेक्षित भाव देखा जा सकता है जहां अन्य जेंडर वैद्य है। परिवार में मुझे किसी तरह की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा लेकिन बाहर कुछ समस्याओं का सामना जरूर करना पड़ा। मेरे मित्र जो बाईसेक्शुअल है उनपर इस डिवीसन का बेहद नकारात्मक प्रभाव पड़ा। अब संवैधानिक रूप से हमें जरूर मान्यता मिल गयी है परंतु समाज अब भी हमें स्वीकार करने को तैयार नहीं है। हम आज भी लोगों की नजर में मजाक है। सरकार की तरफ से हमें कोई सुविधा नहीं है।

(4)आजकल फिल्मों में एलजीबीटीक्यूजन को दिखाया जा रहा हैं। क्या ये फिल्में एलजीबीटीक्यू को सच में अभिव्यक्त कर पा रही है ?

उत्तर- ऐसी बहुत सी फिल्में हैं जहां एलजीबीटीक्यू को दिखाया जाता है। अधिकांशतः उन्हें हास्यास्पद रूप में दिखाया जाता है। पर कुछ फिल्में ऐसी भी बन रही हैं जो इस समुदाय की वास्तविक समस्या को दिखाने का प्रयास कर रही है।

(5)क्या एलजीबीटीक्यू लोगों को लेकर समाज का सोच बदला हैं ?

उत्तर- एलजीबीटीक्यू लोगों को लेकर समाज बहुत बदला है। अगर मैं अपना ही उदाहरण दूँ कि जब मैंने अपने माता-पिता को बताया की मैं बाईसेक्शुअल हूँ तो उन्हें कुछ समझ नहीं आया। लेकिन धीरे-धीरे वो समझने लगे। उन्होंने मुझे स्वीकार किया। मेरे मित्रों ने भी मुझे समझा। मेरे अनुसार समाज में पहले की अपेक्षा काफी कुछ बदला है। केवल एलजीबीटीक्यू लोगों के लिए ही नहीं बल्कि लड़कियों के लिए भी समाज धीरे-धीरे ही सही लेकिन बदल रहा है। प्रेम विवाह को बहुत हद तक मान्यता दी जा रही है। हर क्षेत्र में कुछ न कुछ बदलाव देखा जा सकता है।

(6)भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू लोगों की क्या समस्याएं हैं ?

उत्तर- भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू लोगों को काफी समस्या का सामना करना पड़ता है। अन्य पहचानों की अपेक्षा लेस्बियन और बाईसेक्शुअल लोगों को पहचान पाना थोड़ा कठिन होता है। क्योंकि हमारा तौर-तरीका स्ट्रेट लोगों जैसा होता है। ट्रांसजेन्डर लोगों के साथ काफी भेदभाव किया जाता है। सार्वजनिक स्थलों पर अपमान सहना पड़ता है। परिवार में अपमानित किया जाता है। इज्जत और सम्मान के नाम पर उत्पीड़ित किया जाता है। अकेले जीवन व्यतीत करना पड़ता है। दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। समाज हमारे बारे में बेहद नकारात्मक है। समाज केवल हमें यौनिकता के दायरे में बांध कर देखता है। हमारी भावनात्मक आवश्यकताओं को दरकिनार कर देता है।

14 फ़रवरी 2019 को वैलेंटाइन दिवस के अवसर पर महाराष्ट्र के वर्धा में 'लैंगिक हिरासत और संघर्षशील प्रेम' पर आयोजित कार्यक्रम में सबरी रैना (जो स्वयं को लेस्बियन मानती है) कहती है कि हम पितृसत्तात्मक समाज में रहते हैं और हमें यहाँ अपनी पहचान को स्वीकारने और बताने में दिक्कत होती है। एलजीबीटीक्यू समूह अपनी अस्मिता की लड़ाई हमेशा लड़ती हुई दिखती हैं और यदि वे इस समाज में तीसरे लिंग के साथ पैदा हुई हैं तब उनकी स्थिति और भी दोयम दर्जे के नागरिक के रूप में स्थान पाती है। वह अपना अनुभव साझा करते हुए बताती है कि 'मैं खुशनसीब हूँ कि मेरे परिवार ने इसे स्वीकारने में

कोई दिक्कत महसूस नहीं की। उन्होंने मेरी निजी अस्मिता को स्वीकारने और उसके साथ जीने की पूरी आज़ादी दी।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा तैयार की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) प्रारूप 2019, में एक खंड शामिल है जो ट्रांसजेंडर छात्रों और इसकी जरूरतों पर केंद्रित है।

प्रस्तुत ड्राफ्ट अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति द्वारा तैयार की गयी। इसके आधारभूत स्तंभ 'सहायक, समता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और उत्तरदायित्व' है। इस नीति के अध्याय 6 का शीर्षक है 'समतामूलक और समावेशी शिक्षा' जिसके अंतर्गत ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों पर एक भाग दिया गया है। इस दिशा में ये छोटे-छोटे कदम समाज को समावेशी समाज बनाये रखने की कुंजी है।

अक्सर एलजीबीटीक्यूजन को विभिन्न प्रकार के दुर्व्यवहार, उत्पीड़न और अपमानजनक टिप्पणियों का सामना करना पड़ता हैं। यह शारीरिक और भावनात्मक शोषण होता है। कुछ को ऐसे अपमानजनक रिश्तों में बांधा जाता है जिससे वे मुक्त नहीं हो पाते। इनमें अधिकतर लोग चुपचाप इस शोषण को सहते है क्योंकि बताने के लिए या तो उनके पास कोई नहीं होता और जो होते है वह उन्हें ही दोषी मानते हैं।

इन उदाहरणों के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि यौनिकता एक व्यापक एवं जटिल प्रक्रिया है। यौनिकता के विभिन्न प्रकार होते हैं। जिन्हें बलपूर्वक स्त्री या पुरुष की श्रेणी में नहीं ढकेला जा सकता। ये पहचानें स्वयं को जिस रूप में समझते हैं, समाज द्वारा दिये गये जेन्डर पहचानों से भिन्न है। "किसके पाने से हमारा जीवन पूर्ण हो जाएगा, अथवा हमारा अभाव अधिक-से-अधिक मात्रा में दूर होगा, इसका कोई ठीक उत्तर नहीं दिया जा सकता। इस विषय पर मनोवैज्ञानिक और शरीर-विज्ञानवेत्ता दोनों ही चुप हैं। इस चुनाव का न कोई निश्चित रूप है, न परिभाषा है, न सीमा" [1]उच्चतम न्यायालय द्वारा 6 दिसंबर 2018 को समलैंगिकों के पक्ष में दिये गये फैसले ने इनके लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया। इस फैसले ने इन्हें सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिया तथा अब तक इनके खिलाफ हुए अत्याचार को भी स्वीकार

किया। किन्तु घोषित समलैंगिकों के लिए सम्मानपूर्वक जी पाना अब भी उतना ही कठिन है जितना 2018 से पूर्व। इस विषय पर विश्व भर में आवाजें उठायी जा रही हैं। गोष्ठिवों, रचनाओं और आंदोलनों की इसमें अहम भूमिका रही है। 'आई एम गे, आई एम नॉट ए क्रिमिनल' प्रसिद्ध उपन्यासकार विक्रम सेठ द्वारा चलाएं गये इस कैम्पैन की महत्वपूर्ण भूमिका है। समलैंगिक होना एक पहचान है, एक भिन्न यौनिकता। यह होना कोई अपराध नहीं। लेकिन फिर भी इनके साथ अपराधी जैसा व्यवहार किया जाता है। आज भी ऐसे कई लोग होंगे जो भय के कारण अपनी पहचान को छिपा रहे होंगे और मानसिक यंत्रणा के शिकार हो रहे होंगे। "अदालती फैसले और कानून की अदालती व्याख्या बड़े ही प्रभावशाली पर अमूर्त तरीके से समाज में व्याप्त वातावरण से प्रभावित होते हैं। कानून वही रहता है; उसकी इबारत नहीं बदलती, पर काल, पात्र और स्थान के प्रबल प्रभाव से अदालतों की उसी कानून की, उसी इबारत की, व्याख्या बदलती जाती है"[2]। स्त्री और पुरुष के एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होना जितना सहज है उतना ही सहज स्त्री-स्त्री और पुरुष-पुरुष के बीच का आकर्षण भी है। ना तो आकर्षण के कायदे और कानून होते है और ना ही कोई निश्चित वजह। मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब' की स्त्री पात्र असीमा कहती है- "अगर मर्द-औरत के बीच का रिश्ता शोषक-शोषित का रिश्ता है, तो क्या उसका विकल्प लैज्बियनिज्म है ?....क्या औरत मर्द से सिर्फ इसलिए आकर्षित होती है, क्योंकि वह उसे बच्चा दे सकता है ? अगर औरत मर्द के बिना, स्पर्म दान द्वारा, बच्चा पैदा कर सके तो क्या औरत-मर्द के बीच का आकर्षण समाप्त हो जाएगा ?"[3] इसका उत्तर देते हुए वह आगे कहती है कि "जीतने प्रश्न है, उतने ही उत्तर। पर किसी उत्तर को अंतिम मान लेने का मन नहीं था। मुझे नहीं लगता था कि उन प्रश्नों के सामान्यकृत उत्तर हो सकते थे"[4]। पीड़ित महिलाओं के लिए काम करने वाली असीमा अपने जीवन को शोषित महिलाओं के सेवा में समर्पित करती है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुषवादी मानसिकता के खिलाफ शोषित स्त्रियों की मदद करने और उनके प्रति अपनी पूरी सहानुभूति के बाद तथा ताउम्र पुरुषों से नफरत करने वाली असीमा कभी किसी स्त्री के प्रति आकर्षित नहीं हुई। वह स्वयं कहती भी

है- "अपनी कहूँ तो तमाम तर्कसम्मत निष्कर्षों के बावजूद, मैं खुद कभी किसी औरत के प्रति आकर्षित नहीं हुई"[5] ।

सभ्य समाज में जब हम नित्य सभ्यता की नई-नई यात्राएं कर रहे हैं, अपने को अनुशासित और इस धरती पर सबसे विवेकवान प्राणी घोषित करने के लिए लालायित है और इस बात की दुहाई दे रहे है कि मनुष्य धरती का श्रेष्ठतम प्राणी है। और सामाजिक जीवन को बेहतर-से बेहतर बनाने के लिए नित एक-एक नई चीज अपनी जीवन में सम्मिलित कर रहे है ऐसे में विशेष किस्म के संबंधों को लेकर विशेष किस्म के नियम भी हमारे समाज में आये दिन आ रहे हैं। स्त्री-पुरुष संबंध को लेकर जब विवाह के उपरांत भी बलात्कार जैसे मसलों के लेकर बहुत गंभीरता से हमारा समाज चर्चा कर रहा हैं और यह कहता है कि वैवाहिक जीवन के पश्चात भी पुरुष को स्त्री के साथ या स्त्री को पुरुष के साथ दूसरे पार्टनर कि सहमति के बगैर शारीरिक संबंध बनाना सभ्य आचरण के दायरे में नहीं आता, भले उसके पक्ष में विपक्ष में कानूनी सुरक्षा हो या न हो। दंड का प्रावधान हो या न हो लेकिन सभ्यता यही कहती है कि पत्नी के साथ भी या पति के साथ भी उसके सहमति के बगैर, उसकी इच्छा के विरुद्ध जाकर कोई भी शारीरिक संसर्ग न किया जाए। जबरन अपने को आरोपित करने कि कोशिश न की जाए। जो विवाह संस्थान के नीचे वैद्य है। ऐसी दश में जब वहाँ रोक-टोक की बात और इच्छा को सम्मान देने की बात होती है तो फिर उस संबंध को लेकर जिसे लेकर हमारा समाज अभी पूरी तरह नहीं है और समाज का एक बहुत छोटा हिस्सा उसको स्वीकार करता है उसमें सहमति तो हर स्थिति में अनिवार्य हो जाती है। बिन सहमति के उसके तरफ बढ़ाया गया एक भी कदम सीधे-सीधे अपराध की श्रेणी में ही आएगा। इस तरह के संबंध के लिए दोनों जनों का शारीरिक और मानसिक रूप से परिपक्व होना, तैयार होना आवश्यक है। और इसके पश्चात सहमत होना आवश्यक है। इसके इत्तर अगर इस तरह के संबंध किसी अन्य मापदंड पर या किसी अन्य आधारों पर बनते है तो सीधे-सीधे दुराचार, अपराध या जघन्य कुकर्म के श्रेणी में ही आएंगे।

संदर्भ :

[1] . 'उग्र', पाण्डेय बेचन शर्मा (तृतीय संस्करण : 1953). चाकलेट, कलकत्ता : टंडन ब्रदर्स प्रकाशन, पृष्ठ. 31

[2] . चंद्र, सुधीर, ओम. राय निश्चल,अमिताभ (संपा) (जनवरी-मार्च 2014). समलैंगिकता: कुछ अपने मन की, लमही पत्रिका, पृष्ठ. 42

[3] . गर्ग, मृदुला (प्रथम संस्करण : 1996). कठगुलाब, दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृष्ठ. 190. 191

[4] . वही, पृष्ठ. 191

[5] . वही, पृष्ठ. 191